JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान काल में कबीर दास के साहित्य का महत्व।

लेखिका: डॉ दीपा अंटिन

रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय

संगोल्ली रायन्ना प्रथम श्रेणी घटक महाविद्यालय

बेलगावीए कर्नाटक।

कबीर दास जी का साहित्य आज भी प्रासंगिक है। यह भक्ति काल के निर्गुण धारा के प्रमुख रहस्यवादी संत थे। यह निरक्षरी होते हुए भी आत्मज्ञानी थे उनका पालन पोषण एक मुसलमान जुलाहा परिवार में हुआ थाए वे रामानंद को अपना गुरु मानते और वह एकेश्वरवाद को महत्व देते थेएउन्होंने कर्मकांड का विरोध किया है।

ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म काशी के निकट लहरतारा के पास सन 1398 में पूर्णिमा को हुआ था। उनकी भाषा सधुक्कड़ी हैए उनके उपदेश साखीए रमैनीए बीजकए उलट बांसी में प्राप्त है। लोगों की मान्यता थी कि काशी में देहांत करने से मोक्ष प्राप्ति होती हैए इस मान्यता का विरोध करते हुए वह अपने अंतिम समय में काशी छोड़ मगर चले जाते हैं वही उनका निधन ईसवी पूर्व 1518 के आसपास हुआ ऐसे ऐसा माना जाता है मगर में उनकी समाधि बनी हुई है उसे आज भी लोग पूजते हैं। वे जिस युग में अवतरित हुए थे वह युग विविध प्रकार की विडंबनाओ और विषमताओं से भरा हुआ था। उन्होंने लोगों का अंधविश्वास दूर करने के लिए बहुत कार्य किया है।

कस्तूरी कुंडली बसै मृग ढूंढे बन माहि।

ऐसे घाट-घाट राम है दुनिया देखे नहीं।।

भक्ति काल को सामाजिक जागरणकाल कहा जाता हैए वह अपने विचारों को निर्भीकता से समाज के सामने रखते हैंएउस समय की सामाजिक स्थिति को उन्होंने यथार्थ रूप में भोगा हैए इसलिए उनके वाणी से निकले विचार स्वानुभूति से प्राप्त हैए उसमें कल्पना का समावेश नहीं है। उस समय की जातिगतए वर्गगत और वर्णगत समस्याओं का सामना किया हैएइसलिए उनके विचार अनुभव के रहे हैंए वह हिंदू और मुसलमान को एक ही कर्ता की दो कृतियां माना है। उनमें कोई भेद नहीं इसी तरह राम और रहीम एक ही ईश्वर के दो नाम रहे हैं उन्होंने इस विचार को महत्व दिया है। वह मेहनत को महत्व देते थेए उन्होंने लालचए माया और धन के डूबे हुए लोगों को भटका हुआ राही कहा है। उन्होंने मानव कुल को सही राह दिखलाई है। वह एक सामाजिक हित चिंतक रहे हैंएइसलिए उनके उपदेश आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

जहाँ दया तहँ धर्म है एजहाँ लोभ तहां पाप।

जहां क्रोध तहाँ काल हैए जहाँ छीमा तहँ आप।।

कबीर दास जी ने तत्कालीन धार्मिक ब्रमन्डम्बरों का विरोध किया हैए तथा जनता को सही भक्ति मार्ग दिखाने का प्रयत्न किया हैए जहाँ दया होती है वही न्याय होता हैए जहां स्वार्थ होता है वही पाप के कार्य होते हैंए जो मनुष्य क्रोधी होता है उसका विनाश निश्चित है एजहां क्षमा भाव होता है वही भगवान वास करते हैं। इस तरह धर्म के नाम परएभक्ति के नाम पर एभगवान के नाम पर होने वाले अनाचार का विरोध किया है और निस्वार्थ भक्ति को महत्व देते हुए कहा है कि--

दुख में सुमिरन सब करैए सुख में करै न कोय।

जो सुख में सुमिरन करैए तो दुख काहे होय।।

इस तरह मानव के स्वार्थी स्वभाव का परिचय दिया है। दुख में राम नाम स्मरण और सुख आते ही माया में खो जाना ऐसी भक्ति का विरोध करते हैं। कबीर दास का मानना था कि मनुष्य की प्यास(इच्छाएँ) सीमित होनी चाहिए अगर उसमें अधिकता आ गई तो उसे मनुष्य के लिए काल (विनाश)के समान है। उन्होंने मानवीय संवेदनाओं को महत्व देते हुए कहा हैए कि

गोधनए गजधनए वाजधन और रतनधन खान।

जब आवे संतोषधन सब धन धूरि समान।।

कबीर दास जी ने मनुष्य के मनोविकारों को दूर करने का काम किया हैए उन्होंने संदेश दियाए कि गोधन हो एगजानन होए रतन की खान हो सब मूल्यहीन है संतोष धन के समक्ष क्योंकि इन सारे धनों से भी संतोष धन को खरीदा नहीं जा सकता है।इसीलिए जो मनुष्य

संतुष्ट हैए खुश है वही सबसे धनवान है।इसीलिए मनुष्य को संपत्ति से नहीं उसे उसके गुणों से आंखना चाहिए।

कबीर के उपदेश आज के युग में भी प्रासंगिक नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में प्रमुख रहे हैंएउनका मानना थाए मनुष्य को उस परमसत्ता को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना चाहिएए ना कि तुच्छ देह पर गर्व रखेए इस जग के मोह में पढ़ कर मनुष्य चोरीए हत्या जैसे कई अपराध करता हैए कई बार अपने अहंकार में डूब कर दूसरों पर अन्याय भी करता हैए उसे फिर अपने ही स्वाभिमान को ठेस लगते ही आत्महत्या जैसे जगन्य पाप भी करता है। इन सब का कारण ही नैतिक मूल्यों की कमी रही है कई वर्षों पूर्व ही उन्होंने मनुष्य को आत्मज्ञान दिया है कि मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त होना ही पड़ेगा उनका मानना था कि मनुष्य परमात्मा का अंश है।उसका देह एक कुंभ के समान हैएएक दिन जीवात्मा को परमात्मा में लीन होना है।जैसे कि

जल में कुंभए कुंभ में जल हैए बाहर भीतर पानी।

फूटा कुंभ जल जलहि समाना यह तथ कहौ गयानी ।।

इस ज्ञान को उन्होंने उस समय के अनपढ़- गवाँर और शिक्षा से वंचित लोगों के उद्धार के लिए दिया थाए लेकिन यह ज्ञान आज के युग के लिए भी प्रासंगिक है।

जाति न पूछो साधु कीए पूछ लीजिए ज्ञान ।

मोल करो तलवार की पड़ा रहने दो म्यान।।

आज के मानव जीवन शैली में आडंबर भरा हुआ हैए इसलिए उनका मत था कि मनुष्य को जात-पात को महत्व न देकर ज्ञान को महत्व देना चाहिए।

इस तरह उन्होंने भारतीय नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया है अंततः कहा जाए तो कबीर दास जी के विचार हर दृष्टि से आज के युग के लिए प्रासंगिक सिद्ध होते हैं अगर हम उसे सामाजिक दृष्टि सेए धार्मिक दृष्टि सेए आर्थिक दृष्टि से या सांस्कृतिक दृष्टि से यह हर तरह से समाज के लिए आदर्श रहे हैं।

उनके कुछ दोहे तो कालजई सिद्ध होते हैं जैसे किए

कल करै सो आज करए आज करै सो अब।

पल में परलय होएगाएबहुरि करेगा कब।।

क्योंकि यह दोहा हर समय में प्रसांगिक बना रहेगा इस विचार को हर काल में महत्व दिया जाता है और दिया जाना भी चाहिए।इसीलिए कबीर दास जी का साहित्य समाज के लिए एक वरदान सिद्ध होता है लेकिन कुछ सीमा तक अपवाद तो हर साहित्य में बने रहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ--भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता।